घनानन्द प्रेम / भगत के काव्य में पीड़ा का प्रेम

ज्योति कुमारी,

शोधार्थी

Jyotikumari30011993@gmail.com

घनानंद रीतिमुक्त मुख्यधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि है। ये दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह के यहॉ मीर मुंशी थे तथा सुजान नामक वेष्या से प्रेम करते थे। बादशाह की आज्ञा की अवमानना के अध्ययन में इन्हें देश से निकाल दे दिया गया था। इन्होने सुजान से उनके साथ चलने का निवेदन किया किन्तु उसके द्वारा मना करने के कारण इन्हें वेराग्य उत्पन्न हो गया और वे वृन्दावन आकर निम्बार्क सम्प्रदाय में वैष्णव हो गए।

घनानन्द ने 41 ग्रन्थों की रचना की जो अधिकांशत मुक्तक ही है । इनकी कुछ रचनाएँ सुजानहित, कृपाकन्द, वियोगबेलि, इश्क्लता, प्रेम सरोवर, प्रेम पद्वति, गिरिपूजन, दानधता इत्यादि है ।इनकी रचनाएँ दो प्रकार की रचनाएं है। जिनका सम्बन्ध लौकिक श्रृंगार व भक्ति से है । प्रथम वर्ग की रचनाएं भक्ति सर्वेयों में तथा दूसरे वर्ग की रचनाएँ दोहे – चौपाई शैली में रचित है।

घनानन्द को रस का साक्षात् अवतार कहा गया है । इन्होने मूलतः बहुसख्मक सत्कर छंद 'सुजान' में सम्बोधित करके लिखे है और घनानन्द ने 'सुजानहित' में 'सुजान' के प्रति पांच सौ से उपर भक्ति सवेये लिखे । घनानन्द ब्रजभाषा के प्रेमियों में सुजानहित, सुजानसागर के नाम से प्रसिद्व है । घनानन्द ने सवैयो की रचना कभी–कभी समस्या पूर्ति के ढंग पर भी की है । 'सुजानहित में कई सर्वेयो से अंत में '' व्रजछैल की गैल सदाई रहौ'' की पूर्ति मिलती है । घनानन्द सच्चे प्रेमी कवि है उनका मत्य उनकी प्रेम की अभिव्यक्ति है । लेकिन इनका प्रेम उमयपक्षीय नही है । स्वानुमूतिपरक अभिव्यक्ति के मरण घनानन्द के काव्य में जो मार्मिकता और हदय में स्पर्श करने की क्षमता है । वह अत्यन्त दुर्लभ है । इनकी पदावली में एक हजार से भी अधिक पद पाये जाते है और पदावली के बहुत से पद विनय में सम्बन्धित है जिनमे श्री कृष्ण की उपासना का विधान है । घनानन्द से संगीत का अच्छा ज्ञान था । अतः इनके पद राग–रागनियों भैरव रामकली, गंधार, केदार, पोरण आदि में आनन्द है । इन्होने कृष्ण कोमुदी में कृष्ण की लीलाओं और यमुनायश में समुग का माहालय वर्णित किया है । प्रेम पत्रिका में कृष्ण के नाम पत्र लिखकर उन्हे ब्रजवासियों की ओर से अनेक प्रकार के उलाहने दिए गए है । घनानन्द का सरय बसंत– छोटो सा ग्रन्थ है । इसे एक लम्बी कविता भी कह सकते है। घनानन्द की इश्क्लता में पंजाबी और उई के शब्दों की भरमार है । वियोगवलि में इन्होने फारसी छंदों का भी सफल प्रयोग किया है । इतनी रचनाओं का प्रथम संग्रह भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने 'सुन्दरी तिलक' में प्रकाशित कराया था । इसके उपरान्त 'सुवानशतक नाम से इनके 119 छंद प्रकाशित हुए थे । इसके बाद संवत् 1954 में रत्नाकर जी ने घनानन्द की रचनाओं में संग्रह 'सुजान सागर' नाम से प्रकाशित कराया था । घनानन्द की सम्पूर्ण रचनाओं का वैज्ञानिक रीति से सम्पादन और प्रकाशन विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने कराया है जिसमें 502 छंद है ।

''घनानन्द एकमात्र कवि है जो प्रेम के लौकिक और अध्यात्मिक दोनों छोटी सी स्पष्ट

व्याख्या करते है और उनमें से किसी में भी छोटा या उपेक्षणीय नही मानते''

रामदेव शुक्ल

रीतिमुक्त स्वच्छदत्वावादी कवियों में घनानन्द का सर्वश्रेष्ट स्थान है । सुजान से प्रेम करने वाले घनानन्द की सम्पूर्ण मत साधना प्रेमोदगारों की अक्षम आदि है । इनकी प्रेम सौन्दर्य की पद्वति वियोग व्यथा से ओतप्रोत है । वैयाक्तिकता से जुडी हुई है और उसमे आलौकिकता नवीनता, मार्मिकता, कष्ट सहिष्णुता जैसे गुण विद्यमान है ।

घनानन्द में प्रेम एकानिष्ठ था उनके अनुसार प्रेम की असली पहचान वियोग में होती है । घनानन्द के काव्य में जिस तरह के संयोग में वर्णन मिलता है । वियोग भी उसी तरह मिलता है ।

''हिन भये मीन कहा कछु मैं अकुलानि''

मछली के मर जाने से प्रेम की विभोगता सिद्व नहीं होती । घनानन्द के प्रेम का स्वरूप है वह अपने प्रेमी को कलंकित नही करना चाहते है । आशा का भाव प्रेम या प्रेमिका में बना रहना घनानन्द के प्रेम के अनुसार आवश्यक है । घनानन्द के अनुसार प्रेम की पीर का कारण (एकनिष्ठ, आशावान होना ''चाहत चलन ये संदेशों ले सुजान मै'

मेरे प्राण होठो तक आ गये है सुजान कह दो कि कैसे हो तो घनानंद को सिद्व हो जायेगा की उसे भी मेरी परवाह है तथा घनानन्द के प्राण तभी निकलेगें जब सुजान का संदेश उन्हें मिलेगा ।

प्रेम की पीड़ा का दोनों पक्षों में दिखाते है। पुरूष के पक्ष में भी स्त्री के पक्ष से भी पुरूष रोता हुआ शोभा नही देता वियोग में । परन्तु स्त्री का यह जन्म सिद्व अधिकार है । रोना फारसी परम्परा में पुरूष अधिक रो रहे होते है । और भारतीय परम्परा में स्त्री अधिक रो रही होती है।

उदाहरण –

बिहारी की नायिका रोती है ।

घनानन्द की नायिका रोती है ।

रघुवीर, यक्ष, कालिदास ये तीन भारतीय पुरूष ही रोते दीखते है ।

रामचन्द्र शुक्ल ने ''नागमती के वियोग में '' सर्वोच्च वियोग की उपाधि दी है। घनानन्द इसलिए रोते है क्योंकि पुरूष हो कर रोते है और कहा जाता है उनके ऊपर फारसी का प्रभाव है।

''घनानन्द किराये के आसु बहाने वालो के बीच घनानन्द अपने आसुओं से रो रहे है किराये के आसुओं से नहीं'' ।

प्रेम मूलता चार तरह का होता है ।

पुरवानाराग, मान, प्रवास, करूणा ।

घनानन्द रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि थे उन्होने स्वानुमूति की प्रधानता को अपने काव्य में रेखाकिंत भी किया । लक्षण और उदाहरण की शैली में नही अपनाया काव्यशास्त्रीय विषम–वस्तु से अलग–अलग विषय प्रेम को बनाया । इनके मन में दरबार नही है और अगर मन में दरबार का दवाब नही होता तो स्वच्छंद रचना होगी । इनके काव्य में चमत्कार सब जगह है । क्योंकि दरबार का असर मन पर तो कहीं ना कही है ही दरबार में छोड़ने के बावजूद ।

''मेरी अनुमति, बिना चमत्कार के

रीतिमुक्त धारा नही मिल सकती है''।

जैसे – मुख कमल, हाथी जैसे कान, चरण कमल ये सब पारम्पारिक उपमान है । जिनको कविता नही आती वह इन उपकानों का प्रयोग करते है । पर घनानन्द के काव्य में ऐसा नही है । ठाकुर कहते है नेत्र के तीन उपमान याद कर लिये कलपवृक्ष की जानकारी ले ली । ''आप अगर

पारम्परिक चीजों में कहते जाये तो उनका अर्थ नहीं नये उपमान ढुढियें और नयी अनुमति तभी आप कवि माने जायेगें ।

घनानन्द जब गायिका हम पर बोलती है तो वह बहुत सुन्दर लगती है । इसी बात का वर्णन घनानन्द के काव्य में अन्यों से अलग करना ही घनानन्द का मत्य है ।

गूंगे को गुड़ खिला दो तो वह उसका स्वाद नही बता सकता पर गूंगे में आवाज दे दो तो वह गुड़ के गुण बता सकता है । यही स्थिति घनानन्द के साथ भी मानी जा सकती है ।

''हार पार से लगता है''

वियोग में कैसा दुख है कि नायिका का घर का पहाड़ लगता है लेकिन अब वियोग में पहाड़ ही दोनों के बीच है । फारसी परम्परा का प्रभाव सबसे अधिक रीतिमुक्त कवियों पर है और उनमें से ही घनानन्द पर है ।

रीतिमुक्त काव्य पर असर दो तरह से है :

1. पुरूष का वियोग
2. मुहावरों का प्रयोग

भारतीय परम्परा में संस्कृत के मुहावरे नही मिलते कहावते मिलती है । मुहावरों में पहला अर्थ नही लिया जाता बल्कि लक्षण में उसका अर्थ लिया जाता है ।

– नाच ना जाने आँगन टेढ़ा ।

– फूटी आँख ना सुहाना ।।

लोकोक्तिया जिसमें जीवन के अनुभव में एक वाक्य में सूत्रबद्व रूप में लेकर चलते है ।

– अब पहछाये होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत

रीतिमुक्त में ठाकुर की नायिका विद्रोही है पर घनानन्द की नायिका समाज के बंधनों में रहकर भी वियोग को सहते रहना ही एक विशेषता है ।

घनानन्द की सुजान

सुजान के दो रूप है ।

1. सुजान – जो भलीभांति जानकर हो ।

सुज्ञान – जो ज्ञानी हो उसकी बात ।

घनानन्द धनीमूत आनन्द देने वाला सुजान घनानन्द की एकानिष्ठ प्रेमिका है । मध्यकाल में प्रेमी में प्रेमिका नहीं मिलती । आशा सुजान में गुण है । सुजान सामंती समाज की विवश नारी है । ''प्रेम स्वतंत्रता में प्रतीत था और सामंती समाज में स्वतंत्रता नहीं थी '' घनानन्द की सुपान कभी–कभी विद्रोह की छाया की तरह हमेशा अपने प्रेमी के साथ लगी रहूँ पर यह समाज इस बात की अनुमति नहीं देता ।

''प्रेम की गूढ़ अन्तर्दशा का उद्घाटन जैसा इनमें है ।

वैसा हिन्दी के किसी अन्य श्रृंगारी कवि में नहीं ।

घनानन्द का काव्य स्फूर्त है । उसमें कोई कृत्रिमता नहीं है और ना ही चमत्कार प्रदर्शन या पाडित्य प्रदर्शन का प्रयास ही उन्होने किया । धनानन्द अपनी अनुभूतियों में अभिव्यक्त करने मे ही कति कर्म की सार्थकता समझते है ।

आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने घनानन्द के प्रेम विरह या प्रेम सौन्दर्य पर विचार करते हुए लिखा है:–

''जिस प्रकार ये रीति से अपने में स्वच्छंद रखते थे, उसी प्रकार भक्ति की साम्प्रदायिक नीति से भी अतः ये भक्तिमार्गी कृष्णभक्तों, प्रेममार्गी सूफियों, रीतिमार्गी कविन्दों सबमें प्रदक स्वच्छन्दमार्गी प्रेमोन्मेत गायक थे।'' घनानन्द की विरह–भावना वेदना की विलास पूर्ण कल्पना न होकर अधिकांशत : अपने जिनी जीवनानुभवों पर आधारित है । इसलिये उसमें एक विशेष प्रकार की सहायता और हदयस्पर्शिता मिलती है।

धनानन्द की प्रेम–पीर श्रृंगार–वर्णन में संयोग की अपेक्षा वियोग का प्रभाव स्थायी और अपेक्षाकृत अधिक मार्मिक होता है । वियोग में प्रेमानुभूति की तीव्रता के बढ़ जाने के कारण ही यहॉ तक कहा गया है कि :–

''विरह –प्रेम की जाग्रत गति है और सुप्राप्ति मिलन है''

इसीलिये श्रृगांरी कवियों के वियोग–वर्णन अधिक प्रभावशाली होते है और कभी–कभी कुछ कवियों का महत्व उनके वियोग वर्णन की विशेषताओं के कारण ही रेखाकिंग हो जाता है । रीति स्वच्छद रीति कालीन कवियों में 'प्रेम की पीर' का कवि कहा जाता है ।

इनमें घनानन्द की 'प्रेम की पीर' की तीव्रता अतुलनींय है । वियोग की अकथ और असहय वेदना को झेलते हुए और भीतर ही भीतर घुटते हुए वियोगी का जो चित्र घनानन्द के कवियों में उभरा है । उसके जोड़ का कोई दूसरा वियोगी दिखायी नही पड़ता । 'शुक्ल' तो यहॉ तक कहा कि प्रेम की पीर ही लेकर इनकी वाणी का प्रदादुर्भाव हुआ । उनके काव्य में अध्ययन करने वालों ने कहा है । ''उनका हर छंद एक दीर्घ निःश्वास है ।

घनानन्द को जिस विषम वेदना के सम्बन्ध में इस प्रकार की बातें कहीं गई है । उसके प्रति स्वयम् घनानन्द का कहना है । :–

- जिस पीड़ा को मैं भोगता हूँ उसके जानने का दावा रात और दिन की वे सूनी घड़िया ही कर सकती है जो मुझे तड़पते हुए देखती है । अगर मेरी तड़प में वर्णन किया जाये तो वास्तविकता और वर्णन में दिन–रात का जमीन–आसमान जैसा अन्तर पड़ जायेगा । घनानन्द के काव्य में विरह की प्रधानता है उनका काव्य विरह काव्य ही है । विरही हदय की विभिन्न दशाओं व अनुमूर्तियों की व्यंजना उन्होने अत्यन्त गम्भीर रूप में की है ।

- घनानन्द के सौन्दर्य, प्रेम और विरह का चित्रण सूक्ष्म मार्मिक एवं उत्कृष्ट रूप से किया है । उन्होने अपनी प्रियत्मा के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए अपनी रूचि व सच्ची अनुभूति का उदाहरण दिया है ।

''लट लोट क्लोल करें कल्कण्ड बनी जल जावलि है ।

उॅट–अंग तरंग उठै दुति की परिहै मनो रूप उबै घर च्वे।।

घनानन्द सौन्दर्य वा प्रेम के कवि है अपनी प्रियतमा सुजान के सौन्दर्य ने उन्हें मुग्ध कर दिया था । उसके अंग–प्रत्यंग का मनोहारी चित्र वे अपनी कविता में अंकित करते है । घनानन्द के सौन्दर्य चित्रण ं अंग, भक्ति, लावण्य का चित्रण सरस व मादक रूप में किया गया है जैसे–

''झलकै अति सुन्दर आनन गोर, छके दृग राजति कानून छवै ।

हांसी बोलनि में छवि फूलन की बरसा उर उपर जाति है ज्वें'' ।।

घनानन्द ने अपनी कविता में भावों का सीधा वर्णन किया है । इन भावों को रीझ, विषाद, उलझन, अभिलाषा, मूल, उपालम्म आदि प्रभुरता भातो के आश्रम के रूप में मन, प्राण तो व ज्ञागेन्दिया है तथा जिन्हें माने आश्रम बनाकर कवि ने मानवीकरण कर दिया है। क्रिय के रीसने पर मन की दशा का वर्णन निम्न से स्पष्ट है ।

रावरे रूप की रीति अनूप, नयौ–नयौ लागत ज्यों–ज्यो निहात्यै ।

त्यौ इन आखिन बानि अनौखी अहानि कहूॅ नाहि आन तिहात्यै ।।

इनके काव्य में श्रंगार रस की भी प्रधानता है । श्रृगांर के संयोग पक्ष में भी वे सुन्दर चित्रण करते है यथा:

''मुरव स्वेद कनी मुख चन्द बनी बिधुरी अलकावलि भांति भली ।

घनानन्द का वियोग पक्ष सदैव ही उनके वियोग पक्ष पर हावी रहा ।

यथा : धन आनन्द जीवन मूल सुजान

वी कौधन हूँ न वह दरानै ।

सु न जानिए धो कित छाय रहे ।

द्रश चातक प्रान तपै तरसै ।।

इनकी कविता में विभिन्न भावों का भण्डार है । घनानन्द में भाव अत्यन्त मार्मिक, हदयद्रावक व भावप्रेम प्रेरति है । प्रिय के वियोग में व्याकुलता अनुभव करते है ।

रैन दिना घुटिवो करै प्रान कसरै ऑखिया दुखिया झरनासी ।

प्रतीम की सुधि अन्तर में किसके सखि जों परमीन में गांसी ।।

वही दूसरी तरफ इनकी भाषा में अनेक रंग भी देखने में मिलते है । जिसमें अंलकार योजना, छंद योजना, रस आदि को गिना जा सकता है । आचार्य रामचन्द्र शुकल घनानन्द सन्दर्भ में कहते है :–

'' भाषा के लक्षण एवं व्यंजक बल की सीमा कहा तक है । इसकी परख इन्ही को थी''

और अंलकार काव्य में चारूता का विधान करने से साथ–साथ भावभिव्यक्ति में भी सहायता पहुॅचाते है । घनानन्द के काव्य को भी अंलकारी की योजना इन्हीं देा उददेश्यों से की गई । उनहें सादृश्यमूलर अंलकार विशेष प्रिय है तथा इनके कवितौ में यमक, श्लेष, रूपक, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास, प्रतीक, सन्देह आदि का प्रयोग हुआ।

चमक – काहू कलपाय है सो कैसे कल पाय है

प्रतीक – ते आगे चन्द्रमा कंलक सो लगत हे ।

विरोधाभाषा – अमोही क मोह मिठास बगी ।

श्लेष – कुछ मेरियो पीर हिए परमौ ।

घनानन्द की कविता में की रस माधुरी से भरपूर है । उसमें प्राणों का संगीत है । घनानन्द ने सबैया, भक्ति, नाटक, दोहा, चौपाई छन्दों में प्रयोग किया है । मूलता कहा जा सकता है कि घनानन्द की कविता में सहज भाव परिलक्षित होते है । उनकी भावानात्मक और कलात्मकता के साथ–साथ उनके प्रेम में पीर और भक्त आदि का सब रूप देखने को मिलता है ।

सन्दर्भ गंथ

1. घनानन्द भक्ति – आचार्य विध्यानन्द प्रसाद मिश्र, वाणी रितान प्रकाशन ।
2. हन्दी रीति साहित्य – भागीरथ मिश्र, रावकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।
3. रीति कालनी कवियों की प्रेम व्यजना – डा0 प्रेमशंकर शुक्ल ।
4. घनानन्द एक अध्ययन – डॉ0राजेन्द्र मोहन भटनागर, भारतीय ग्रंथ निकेतन ।
5. घनानन्द मत्य और आलोचना– डॉ0 किशोरीलाल, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
6. घनानन्द संदेश और शिल्प – डॉ0 राज बुद्विराजा, वाणी प्रकाशन ।

Copyright © 2018, Jyoti Kumari. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.